दौड़ –धूप केवल स्थायी

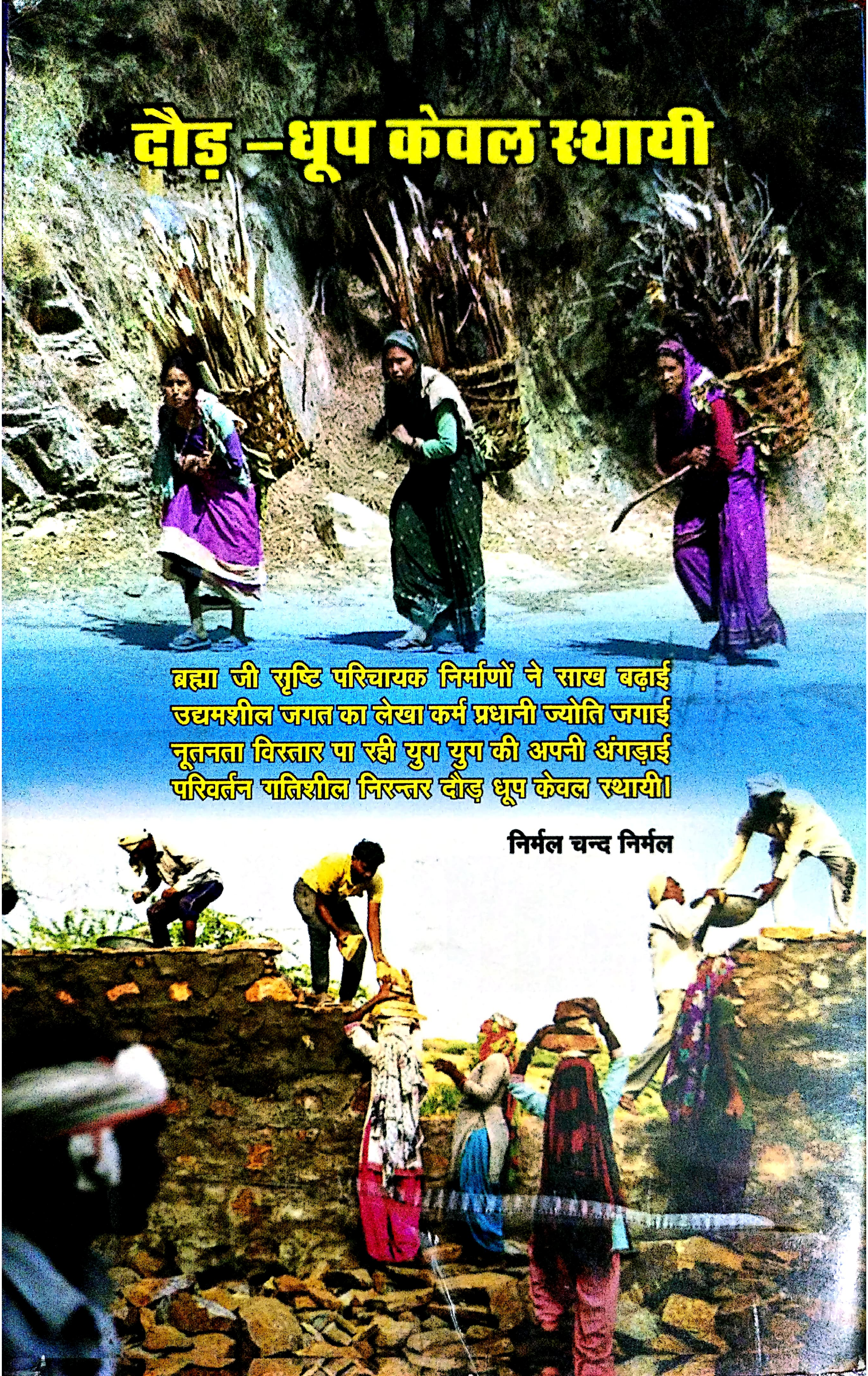

ब्रह्मा जी सृष्टि परिचायक निर्माणों ने साख बढ़ाई
उद्यमशील जगत का लेखा कर्म प्रधानी ज्योति जगाई
नूतनता विस्तार पा रही युग युग की अपनी अंगड़ाई
परिवर्तन गतिशील निरन्तर दौड़ धूप केवल स्थायी।

निर्मल चन्द निर्मल

दौड़–धूप केवल स्थायी

(कविता संग्रह)

निर्मल चन्द निर्मल

ND PUBLICATION

ND PUBLICATION
NEW DELHI

[illegible] (कविता संग्रह)
[illegible]

सर्वाधिकार लेखकाधीन

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य 150/-

ISBN
[illegible]

प्रकाशक-
एन.डी. पब्लिकेशन नई दिल्ली
[illegible]
[illegible]

अनुक्रमणिका

1. मातृभूमि वंदना	1
2. मधुर मुस्कान लिये हूँ	2
3. शांति विधान बने	4
4. जग चाहता निर्माण है	5
5. अपनापन हम लेकर आये	6
6. वरना बेघर अच्छे	7
7. आप ही सुलझाईये	8
8. बचपन जैसे	9
9. वर्तमान को मत कुचलो	10
10. वर्तमान से प्यार	12
11. आदत से मजबूर	13
12. गहरे उतर न पाये	14
13. विपरीत मापदण्ड	17
14. उज्जवल भविष्य	18
15. कुछ तो करो विचार	19
16. हमने उलझन आप बढ़ाई	20
17. दौड़ धूप केवल स्थाई	21
18. शर्म हमें आती	22
19. बड़े – बड़े नाम	23
20. जैसा देखा	24
21. दल बदल	25
22. बढ़ी धूप की चाह	26
23. अपनों में ऐसे भी होंगे	27
24. अनगिन लेखों का संग्रह	28
25. माँ	29
26. हीनग्रंथि	30
27. सिलसिला	30
28. धर्म	31
29. स्मृतियाँ	32
30. दुविधा	33
31. हवा न देना	34
32. तनिक लाज न आई	35
33. समता का नारा	36
34. जाना अटल जी का	37
35. सरकारों की लीला	38

36. शासन हथियाने को 40
37. शेष सब कुशलक्षेम है 42
38. हमको मिला स्वराज्य 43
39. ये मेरा काम नहीं है 44
40. साहस लिखता नाम 46
41. देश भक्ति कवियों के नाम 47
42. लेखे वर्ष हजारों के हैं 48
43. सच्चे जमीन पर 49
44. फादर्स डे – श्रृदेय पिता श्री की स्मृति में 50
45. खा लिया धतूरा 51
46. बरस जाये तो पानी है 52
47. आलम में तनहाई नहीं 53
48. आये निर्मल बंधे बंधाये 54
49. सबको नाच नचाया है 55
50. तलाशें तो कहाँ 56
51. गांधी का ही जयकारा है 57
52. आते हैं ये बिना बुलाये 58
53. रखना हमको ध्यान 59
54. शाखाओं में शाखें 60
55. सामयिक दोहे 61
56. सत्रह मुक्तक 63
57. जीवन का क्या अभिप्राय 67
58. ये कलम चलेगी उस क्षण तक 68
59. क्या अजब होते हैं लोग 69

मातृभूमि वन्दना

इस धरती को नमन करें हम
जिस पर जन्म लिया।

जिसने संभव किये हमारे
जीवन के आधार
उऋण न होंगे भारत माँ से
लेवें जन्म हजार,
पवन–कोश, जल,अन्न
सभी कुछ इसने हमें दिया।

सुविधायें पाई हैं हमने
लोकतंत्र ले आये
आजादी के मधुर गीत
इस धरती पर ही गाये,
इसी धरा की गोदी में
हमने क्या–क्या न किया।

वीरों का इतिहास मिला है
मिली ख्याति मनमानी
धूमिल होने नहीं दिया
अपने चेहरे का पानी,
मिला हमें है सदा सदा
ममता से भरा हिया।

पीड़ायें सहलाई इसने
देकर शीतल छाया
सब कुछ इसने सहा
दिलाई हमें निरोगी काया,
फटा कभी जब हृदय हमारा
ढाढस देकर सिंया।

मातृभूमि से बढ़कर कोई
सुखद नहीं है ठौर
धर्म यही है कर्म यही
जीवन का अन्तिम छोर,
यहीं रोशनी मिली प्यार की
यहीं बुझा है दीया।

✦

निर्मल चन्द निर्मल

प्रकाशित कृतियाँ – उन्नीस हैं यथा –

1. उठाओ कुदाली
2. और कुछ नहीं हुआ
3. गीत वही लिख पाता है
4. गीत है ये जिन्दगी
5. कुछ ऐसे लोग हुआ करते
6. याद नहीं बिसरी
7. जुगनुओं के पास भी ईमान है
8. पसीना बोलता है
9. गुड़िया पूछ रहीं मम्मी से
10. प्रेम रुपी रंग कितने
11. द्रवणांक
12. आगे कौन बढ़े
13. प्रीत के सुख-दुख घनेरे
14. मील के पत्थर नहीं कोई
15. एक पहर दिनमान शेष है
16. निर्मल सतसई
17. त्रिधारा
18. कबीरा खोजत फिरत मुकाम
19. विविधा

विशेष :

दूरदर्शन और आकाशवाणी से हिन्दी और बुन्देली में रचना पाठ होते रहते हैं। भाषा वा विचारों की क्लिष्टता से परहेज रखता हूँ। मेरी कवितायें केवल विद्वानों को नहीं वरन् उनको भी हैं जो अपनी समझ कविताओं में तलाशते हैं। सभी उम्र के पाठक मेरी लेखन दृष्टि में रहते हैं।

संपादक त्रय डॉ. सरोज गुप्ता, डॉ. लक्ष्मी पाण्डे और डॉ. घनश्याम भारती ने मेरे साहित्यिक अवदान पर अभिनन्दन ग्रन्थ 'सत्य से साक्षात्कार के कवि निर्मल चन्द निर्मल' शीर्षक से एक समीक्षात्मक कृति दिल्ली से प्रकाशित कराई है जिसमें मेरा पूरा साहित्यिक लेखा जोखा उपलब्ध है। कृपया आप देखें।

संबद्धता :

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, शाखा सागर, हिन्दी उर्दू मजलिस सागर, प्रगतिशील लेखक संघ, सागर, मध्यप्रदेश लेखक संघ, भोपाल और श्यामलम साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था सागर।

निवास : 89 बी, मधुवनग्रीन्स, तिली वार्ड सागर, म.प्र. 470002
मो.नं. 9993949714

ND PUBLICATION
Badapur South East Delhi 110044
www.ndpublication.com
Email: ndpublication@gmail.com
Mob: 7566257575

ISBN
978-81-937502-2-3